नों ने सुनाई कामयाबी की कथा

लेज में हुई मथुरा व फरह विकास खंड के किसानों की कार्यशाला

तरक्की की कहानी, खुद की जुबानी

ताश खेलना छोड़कर किया पानी का संरक्षण

प्रगतिशील किसान मोती सिंह कुशवाह ने बताया कि वह एक फसल लेते थे और दिन भर ताश खेलते थे। बैंक ने कर्ज की वजह से जब जमीन को नीलामी की कार्रवाई की तो उन्होंने कुछ नया करने का सोचा, पानी का संरक्षण किया और जमीन के अंदर पानी को खारी कर रहे कीटाणुओं को खत्म कर दिया। आज उनकी बोरिंग मीठा पानी दे रही है और उसी जमीन में तीन फसल ले रहे हैं।

ससुराल की बकरी ने बदल दी किस्मत

गांव परखम के किसान बच्चू सिंह ने बताया कि उन्हें ससुराल से विदा में एक बकरी मिली थी। उसका पाला और धीरे-धीरे उनके पास एक सौ पच्चीस बकरी हो गई। अब उन्होंने बकरी बेच कर मकान बनवा लिया। आज भी उनके पास पचास-साठ बकरी हैं। केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. मनमोहन सिंह चौहान ने उनको दूसरों के लिए प्रेरणादायी बताया।

आंवला, बेलपत्र और करोंदा से ले रहे मुनाफा

प्रगतिशील किसान, इंजीनियर राजकुमार सिंह ने बताया कि पहले उन्होंने अपने खेत में आंवला लगाया। उसके चारों तरफ बाढ़ के लिए करोंदा और नींबू के पेड़ लगाए। तीन साल बाद फल आ गए। आज कई कंपनियों के ठेकेदार खेत से ही आंवला खरीदकर ले जा रहे हैं। इसी तरह वह बेलपत्र का जूस बेचने वालों को स्वयं बेलपत्र उपलब्ध करा रहे हैं।

जैविक विधि से घरों में उगाएं सब्जियां

मथुरा विकास खंड के गांव बाबूगढ़ के किसान चरन सिंह ने किसानों को बताया कि वह जैविक विधि से पॉली बैग में सब्जियों के पौधे तैयार कर रहे हैं। तीस-चालीस रुपये की लागत में एक पॉलीबैग बनकर तैयार हो रहा है। उनका कहना था कि अपने घर में तरह-तरह की सब्जियों के दस-बारह गमले रखें, जिससे परिवार के लायक सब्जियां मिल जाएंगी।

बोले विधायक, अन्नदाता को जागना होगा

विधायक पूरन प्रकाश ने कहा कि अगर महिलाएं खेती-क्यारी में काम करना छोड़ दें और पशुपालन न करें तो किसान खेती को संभाल नहीं पाएंगे। महिलाओं की मेहनत-मजदूरी को जोड़कर अगर उत्पादन को देखा जाए तो किसान को उसकी फसल का मूल्य नहीं मिल पा रहा है। किसान की इस समस्या को लेकर हमारी सरकार भी चिंतित हैं। किसानों के हित में विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। उन्हें उपज का भी सही दाम दिलाया जा रहा है।

खेती व पशुपालन में नाम कमाने वाले हुए सम्मानित

फरह : कार्यशाला में खेती व पशुपालन में खास करने वालों को भी सम्मानित किया गया। बकरी पालक बच्चू सिंह, जैविक खेती के लिए रामवीर भगत, बागवानी के लिए इंजीनियर राजकुमार प्रधान, घाटे की खेती को मुनाफे में बदलने के लिए शिक्षक मुकेश कुमार, एक बीघा जमीन से खेती की शुरुआत कर पच्चीस बीघा खेती कर रही महिला किसान सत्यवती, पशुपालन के लिए महिला किसान ब्रजेश को केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. मनमोहन सिंह और दैनिक जागरण, आगरा के संपादकीय प्रभारी अवधेश कुमार गुप्त ने प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। उन्हें हिंदुस्तान कॉलेज की ओर से स्मृति चिन्ह दिए गए।

कार्यशाला में प्रगतिशील महिला किसान बृजेश को सम्मानित करते केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. मनमोहन सिंह चौहान और दैनिक

ये हुआ किसानों पर प्रभाव

जैविक खेती और पॉली बैग में सब्जी उत्पादन को लेकर प्रगतिशील किसान चरन सिंह किसानों को अपने अनुभव बता रहे थे। उस समय किसानों की दिलचस्पी जैविक खेती में काफी दिखाई दी। किसानों ने उनका व्हाट्सएप नबंर भी मांग लिया। इसके साथ उत्साहित किसान उनके व्हाट्सएप से सीधे जुड़ गए। उन्होंने व्हाट्सएप पर किसानों को जैविक बेस्टडीकंपोजर निश्शुल्क उपलब्ध कराने के लिए तैयार हैं। उन्होंने किसानों से यहां तक कहा

दैनिक जागरण जय किसान

मजबूत देश
सशक्त, समृद्ध औ

विशेषज्ञों ने दिखाई राह, किसान

दैनिक जागरण के जय किसान अभियान के तीसरे दिन हिंदुस्तान कॉ

जागरण संवाददाता, फरह (मथुरा) : जय किसान अभियान के तीसरे दिन गुरुवार को किसानों ने अपनी कामयाबी की कथा सुनाई तो विशेषज्ञों ने उन्हें उज्ज्वल भविष्य के रास्ते सुझाए। हिंदुस्तान कॉलेज फरह के ऑडिटोरियम में विकास खंड फरह और मथुरा के किसानों की संयुक्त कार्यशाला में किसानों को जैविक विधियों के सहारे खेती को लाभकारी बनाने पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही जल संरक्षण और स्वस्थ्य खाद्यान्न उत्पादन की तकनीकी को भी मंच से साझा किया गया।

कार्यशाला में किसान का कृषि विशेषज्ञों से सीधा संवाद हुआ। कृषि उत्पादन से लेकर बाजार तक पर मंथन किया गया। मुख्य अतिथि पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान के कुलपति प्रोफेसर डॉ. केएमएल पाठक ने हरित क्रांति से लेकर वर्तमान तक हमसे कहीं न कहीं गलती हुई है। अधिक उत्पादन के नाम पर मिट्टी में जहर भर दिया गया है। उन्होंने कहा कि हम उत्पादन बढ़ाने के लिए जिस दिशा में आगे बढ़े, उस राह में किसान भटक गया। आज हम खेती करते हैं, लेकिन तकनीकी का इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। पशुपालन कर रहे हैं तो पशुओं से हमारा रिश्ता दूध लेने तक रह गया है। जिस दिन जानवर ने दूध देना बंद कर दिया, उसी दिन हमारा उससे मोहभंग हो रहा है। यह हालात ब्रज में ही नहीं बल्कि देश भर के किसानों के हैं। उन्होंने नसीहत देते हुए कहा कि किसानों ने खेती का ढर्रा नहीं बदला और उसके साथ पशुपालन नहीं किया तो किसानों की तरक्की की कल्पना करना बेमानी है। कुलपति पाठक ने अपने तजुर्बा भी किसानों को बताया कि किसानों से वेटेरिनरी कॉलेज आने का न्यौता भी दिया। कहा, कि पशुपालन और कृषि वैज्ञानिक किसानों की समस्याएं के लिए हर समय तैयार है, लेकिन उनको अपनी सोच बदलनी होगी। केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मखदूम फरह के निदेशक और कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. मनमोहन सिंह चौहान ने

फरह स्थित हिंदुस्तान कालेज में दैनिक जागरण के जय किसान अभियान की कार्यशाला का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते मुख्य अतिथि वेटरिनरी विद्याविद्यालय के कुलपति प्रो. केएमएल पाठक, बलदेव विधायक पूरनप्रकाश, गोवर्धन विधायक कारिंदा सिंह, केंद्रीय बकरी अनुसंधान के निदेशक डा. मनमोहन सिंह चौहान, हिंदुस्तान कालेज के निदेशक आरके उपाध्याय और दैनिक जागरण आगरा के संपादकीय प्रभारी अवधेश कुमार गुप्त • जागरण

दैनिक जागरण के जय किसान की कार्यशाला में किसानों को सफलता के टिप्स देते वेटरिनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केएमएल पाठक, जिला कृषि रक्षा अधिकारी यतेंद्र सिंह और वैज्ञानिक एमपी सिंह • जागरण

ये अधिकारी रहे मौजूद

केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. एमके सिंह, वेटेरिनरी कालेज के डॉ. संजीव कुमार, विनोद चौधरी, और रजनीश सिरोही, हिंदुस्तान कालेज के डायरेक्टर आरके उपाध्याय, एसडीओ कृषि विभाती चतुर्वेदी, इफ्को के क्षेत्रीय प्रबंधक सत्यवीर सिंह, बीमा कंपनी के राहुल त्रिपाठी, नगर [illegible]

प्रदर्शनियों से भी बढ़ा किसान का ज्ञान

फरह : कार्यशाला के बाहर विभिन्न विभागों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। इफको की प्रदर्शनी में एरिया मैनेजर सत्यवीर सिंह ने इफको के जैविक और उर्वरकों की जानकारी दी। इसके अलावा कृषि [illegible]

परम्परागत फसल के साथ ही दूसरी फसलों को भी अपनाना होगा। वैज्ञानिकों द्वारा आय बढ़ाने और कृषि को बेहतर बनाने की बात समझ आई। कृषि के लिए आधुनिक तरीके अपनाएंगे। दैनिक जागरण का जय किसान अभियान सराहनीय है।

राजेश कुमार

फसल चक्र अपनाने से उत्पादन भी बेहतर होगा, ये बात अपनाई जाएगी। ढेंचा की फसल को कर खेत को भी जीवांश पदार्थ देने का काम करेंगे। इनकी कमी से उत्पादन घट रहा है, जिससे आय प्रभावित हो रही है। किसानों को जय किसान अभियान से सीख लेनी चाहिए। **सौदान सिंह**

आधुनिक तरीके अपनाकर खेती करने से उत्पादन और आय को बढ़ाया जा सकता है। जय किसान कार्यशाला में इस संबंध में काफी जानकारी मिली है। अब खेतों में ऐसा प्रयास किया जाएगा। मुझे उम्मीद है कि निश्चित तौर पर इस बार लाभ होगा। **बंटू**

दैनिक जागरण ने किसानों के बीच आकर अच्छा काम कर रहा है। दूध को सीधे नहीं बेच उनको डेयरी उत्पादों के रूप में बेचकर आय को बढ़ाया जा सकता है। इस दिशा में काम करने का प्रयास किया जाएगा। अगर सरकारी सहायता मिलेगी तो बेहतर होगा।

अवधेश सिंह

कृषि विशेषज्ञों ने बताया कि जमीन खराब होने का असर स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। किसान अपने खेती में रासायनिक खाद डालकर अतिरिक्त पैसा लगा रहा है जिससे उसे आर्थिक नुकसान भी हो रहा है। यहां आकर नई जानकारी मिली है, इससे खेती में बदलाव करूंगा। **उदयभान**

सेहतमंद माटी बदलेगी किस्मत

दैनिक जागरण ने कागारौल में आयोजित की जय किसान कार्यशाला, मृदा की बेहतरी को बताए तरीके

जागरण संवाददाता, आगरा: मृदा का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है और उसे सुधारने की कोशिश में जहरीले रसायनों का प्रयोग हो रहा है। इनसे गंभीर बीमारियां लोगों के शरीर में पहुंच रही हैं। किसानों को इस संकट से बचाने और फसलों को उन्नत बनाने के लिए दैनिक जागरण ने गुरुवार को कागारौल में किसानों को जागरूक किया। उनको समग्र, मिश्रित कृषि के तरीके सुझाए तो आय बढ़ाने के नुस्खे बताए। समझाया कि रसायनों के अंधाधुंध उपयोग के बजाय माटी की सेहत सुधारने पर ध्यान दें, तभी उनकी किस्मत बदलेगी। किसानों ने भी इसे अपनाने और व्यवहार में लाने की सहमति जताई।

गुरुवार को कागारौल स्थित सोलंकी मैरिज होम में जागरण की जय किसान कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें वैज्ञानिकों और कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को बेहतर कृषि के नुस्खे सुझाए। उन्होंने बताया कि मृदा की जांच कराए बिना उसमें पोषक तत्व नहीं डालने चाहिए। इससे जमीन का संतुलन बिगड़ रहा है और उत्पादन घट रहा है। हम जानकारी के अभाव में ऐसे तत्वों को डाल रहे हैं, जो पहले से मिट्टी में अधिक मात्रा में हैं। इसके साथ ही उत्पादन बढ़ाने और फसलों को कीटों से बचाने के लिए जहरीले रसायनों को खेतों तक पहुंचा रहे हैं।

आगरा के कागारौल के सोलंकी मैरिज होम में आयोजित दैनिक जागरण की जय किसान कार्यशाला में सम्मानित किसान और अतिथि • जागरण

वैज्ञानिकों ने बताया कि जैविक खाद के प्रयोग से मिट्टी को जहरीली होने से बचाया जा सकता है और उत्पादन को भी बेहतर बनाया जा सकता है। विशेषज्ञों ने कहा कि जल स्तर तेजी से गिर रहा है और जिले के 15 में से 12 ब्लॉक डार्क जोन में हैं। ऐसे में अगर हम वर्षा के पानी को हर खेत में रोकने की योजना बनाकर रखेंगे तो सिंचाई में समस्या नहीं आएगी। साथ ही उर्वरक मिट्टी के बहकर जाने का डर भी नहीं रहेगा। इसके लिए हमें हर खेत में गड्ढे बनाकर जल संचयन करना होगा।

- किसान विविध खेती और पशु पालन, मुर्गी पालन, मक्खी पालन कर आर्थिक मजबूती ले सकते हैं। इस अवसर पर क्षेत्र के प्रगतिशील किसानों को बेहतर उत्पादन के लिए सम्मानित किया गया। कई उत्साहित किसानों ने उपज बढ़ाने के लिए अपने अनुभव भी बताए।

मृदा का रखना होगा ख्याल

किसान उत्पादन और आय बढ़ाने के लिए मृदा के स्वास्थ्य का ख्याल रखना होगा। फसलों के लिए मृदा में पोषक तत्व समाप्त हो रहे हैं। मृदा और फसलों से मिलने वाले पोषक तत्व हमें मिल नहीं पा रहे हैं। इससे शरीर में तत्वों की कमी और बीमारियां हो रही हैं। किसानों का चाहिए कि वे जैविक खेती की शुरूआत करें। मिट्टी और पानी की समय पर जांच कराकर भी बेहतर खेती की जा सकती है। अच्छी खेती के लिए मृदा और सिंचाई के लिए प्रयोग होने वाला पानी दोनों ही बेहतर होना चाहिए।

एसके दुबे, केंद्राध्यक्ष भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान

पशुपालन कर किसान बढ़ाए आय

फसल के साथ ही पशुपालन कर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। पशुपालन करने में कुछ सावधानी बरतने से नुकसान होने का डर समाप्त हो जाता है। किसानों को चाहिए कि पशुओं को बीमारी से बचाने के लिए समय पर उनका टीकाकरण करा लें। इससे बीमारियों का खतरा समाप्त हो जाएगा। बीमारियों को पनपने से पहले ही रोकथाम करने से आर्थिक नुकसान से भी बचा जा सकता है। पशुओं के चारे पर भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। दूध को डेयरी उत्पादों के रूप में बेचकर किसान अपनी आय को और बढ़ा सकते हैं।

एमएस चौहान, निदेशक, केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मकदूम मथुरा

युवा शक्ति को खेती से जोड़ें

युवाओं को गांव और खेती से रूझान समाप्त हो रहा है। वे खेती से जुड़कर और आधुनिक तरीके से खेती कर जॉब से बेहतर आय कर सकते हैं। शिक्षित युवा कृषि से जुड़ेंगे तो वे उत्पादन और आय दोनों बढ़ा सकते हैं। वे तकनीक का प्रयोग कृषि को बेहतर बनाने में करें। विभिन्न उपलब्ध संसाधनों और योजनाओं का लाभ लें। खेती को व्यवसाय बनाने के लिए गांव स्तर पर समूह गठन कर सकते हैं। समूह में जब किसान कोई उत्पादन करेंगे तो खरीदार खुद चलकर गांव तक आ जाएंगे। उन्नत खेती की जानकारी लेने के लिए दूसरे स्थानों पर प्रशिक्षण लेने का भी प्रयास करना चाहिए।

जितेंद्र चौहान, कृषि वैज्ञानिक